Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं

विषय - हिन्दी साहित्य

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - एकांकी संचय

पाठ - 6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक डॉ० रामकुमार वर्मा

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक एकांकी संचय की पृष्ठ संख्या-82 पर दिए पाठ-6 'दीपदान' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! आज हम 'दीपदान' नामक एकांकी को पढ़ने जा रहे हैं इसलिए आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक निकाल लें और पढ़ने के लिए तैयार हो जाएँ। पाठ के मध्य आपसे कुछ प्रश्न भी पूछे जाएँगे, जिनके उत्तर आप तभी दे पाएँगे यदि आप पाठ को ध्यानपूर्वक सुनेंगे व समझेंगे। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बच्चो ! एकांकी को आगे पढ़ने से पहले यह जान लेते हैं कि पिछले सप्ताह हमने क्या पढ़ा था। 'दीपदान' डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा रचित एकांकी है जिसमें पन्ना धाय की देशभक्ति और अनुपम त्याग का वर्णन है। दासी पुत्र बनवीर नगर में एक उत्सव का आयोजन करवाता है जिसमें नृत्यांगनाएँ तुलजा भवानी के सामने नृत्य करती हैं

पूरा महल रास रंग में डूबा हुआ है। नृत्यांगनाओं को नृत्य करते देख कुँवर उदयसिंह अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। कुँवर पन्नाधाय को उनका नृत्य देखने के लिए कहते हैं लेकिन पन्नाधाय उन्हें नाच देखने चलने से इन्कार कर देती है कुँवर जब अकेले ही जाने की बात करते हैं तो पन्नाधाय उन्हें मना करते हुए कहती है कि बाहर ज़हरीले सर्प घूम रहे हैं, जो किसी भी समय तुम्हें डस सकते हैं। साथ ही वह कहती है कि तुम चित्तौड़ के सूरज हो अर्थात् तुम चित्तौड़ के भावी नरेश हो, पूरा चित्तौड़ तुम्हारे निर्णयों पर संचालित होगा। इसलिए तुम्हें अँधेरे में बाहर नहीं जाना चाहिए। कुँवर पन्नाधाय से रूठकर भोजन न करने की ज़िद करते हुए सोने चले जाते हैं। वे ज़मीन पर ही सो जाते हैं।

बच्चो! अब एकांकी को पृष्ठ संख्या 86 (छियासी) से पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं। उदयसिंह के रूठकर सो जाने के बाद सोना का नूपुर-नाद (घुँघरू की आवाज़) करते हुए प्रवेश होता है। रावल सरूप सिंह की पुत्री सोना कुँवर को ढूँढ़ती हुई उदयसिंह के कक्ष में प्रवेश करती है। वह कुँवर को नृत्य-महोत्सव में आमंत्रित करने के लिए आई है। पन्ना सोना को शांत कराती हुई बताती है कि उदय सिंह रूठकर सोने चले गए हैं। वे सोना चाहते हैं। सोना इस बात का मज़ाक करते हुए कहती है कि मैं भी तो सोना हूँ। ऐसा कहकर वह अपनी बात पर ही हँसती है। पन्ना को सोना की यह बात अच्छी नहीं लगती। वह सोना को समझाती है कि तुम लोग कुँवर का ध्यान भटका रहे हो अर्थात् उनका ध्यान नाच-गाने की ओर खींच रहे हो जबकि उन्हें वीरता की कहानियाँ सुननी चाहिए। उन्हें राज्य संचालन के नियम आने चाहिए क्योंकि

उन्हें आगे जाकर राज्य संभालना है। सोना पन्ना से पूछती है कि कुल देवी (तुलजा भवानी) के आगे नाचना क्या बुरी बात है ? आज हमने तुलजा भवानी में बने मयूर पक्ष कुंड में दीपदान किया तथा मन भर कर नाच किया। कुँवर जी भी हमारा नाच देर तक देखते रहे। पन्ना सोना की यह बात सुनकर कहती है कि बस सोना ! अगर तुम रावल सरूप सिंह जी की लड़की न होती तभी सोना बात काटती हुई कहती है कि यदि मैं कोई और होती तो तलवार झोंक देती। वह यह भी कहती है कि तुम उदयसिंह के संरक्षण में इतनी खो गई हो कि अपने पुत्र चंदन का भी तुम्हें ध्यान नहीं रह गया है। उसे भी तुमने भुला दिया है अर्थात् तुम चंदन का ध्यान नहीं रखती हो। तुमने उदयसिंह को इतना प्यार दिया है कि तुमने अपने मन में केवल उन्हें ही बसा लिया है। जिस प्रकार एक म्यान में केवल एक तलवार रह सकती है उसी प्रकार तुमने अपने हृदय में केवल उदयसिंह को बसाया हुआ है बाकी सभी रिश्तों को तुमने भुला दिया है। उसके अनुसार पन्ना के हृदय में न ममता है, न माया है, केवल उदयसिंह तुम्हारे हृदय में बसे हैं।

पन्ना, सोना को इस प्रकार कविता के अंदाज़ में बातें करने से मना करती है और कहती है तुम्हें पता है कि यहाँ बनवीर का राज्य है। इतना आसान नहीं है यहाँ सब कुछ। सोना बनवीर के प्रलोभन (लोभ) में डूबी हुई है। वह बनवीर के प्रति समर्पित है। इसलिए वह कहती है कि उन्हें श्री महाराज बनवीर कहो। वह पन्ना को बताती है कि वे (बनवीर) बागड़ के इलाके से हाथी-घोड़ों को सजाने के लिए जो बड़ी सी झूल (चौपायों की पीठ पर डाले जाने वाला कपड़ा, कलाकारी किया कपड़ा) लाए थे उस समय वे मेरे लिए भी एक रेशम की झूल लाए थे।

उस झूल को सिर से ओढ़कर नाचने से ऐसा लगता था कि मकड़ी के जाले जैसा बना हुआ, जिसके आर-पार सूरज की किरणें थिरकती (नाचती) हुई नज़र आती थीं।

सोना स्वयं पर बनवीर की असीम कृपा होने की तुलना द्रोपदी के चीर से करती हुई पन्ना से कहती है कि जिस तरह द्रोपदी की लाज की रक्षा करने के लिए श्रीकृष्ण ने उनके चीर को बढ़ा दिया था। उसी चीर की तरह मुझ पर बनवीर की बहुत कृपा है। सोना पन्ना को बताती है कि आज सुबह ही बनवीर ने मुझे बुलाया और कहा ... इतना कहते ही सोना रुक जाती है। उसे लगता है कि पन्ना मेरी यह बात सुन कर बुरा मान जाएगी। पन्ना के यह कहने पर कि वह उसकी इस बात का बुरा नहीं मानेगी तो सोना उन्हें बताती है कि बनवीर के अनुसार महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बन कर बैठ गई हैं। जिस प्रकार पहाड़ अचल है, वह अपने स्थान से नहीं हटता और समय के अनुसार स्वयं को नही बदलता उसी प्रकार धाय माँ महल में पहाड़ की तरह जमकर बैठी हुई हैं और किसी प्रकार के परिवर्तन की आशा उनसे नहीं की जाती। अर्थात् वे न कोई बदलाव चाहती हैं, न करने देती हैं।

बच्चो! अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी। प्रश्न सुनकर आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए रोक देंगे, और उस दौरान पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखेंगे। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न 1. बनवीर द्वारा आयोजित नृत्य-गीत का उत्सव पन्ना को क्यों अच्छा नहीं लग रहा था?

प्रश्न 2. किसने पन्नाधाय की तुलना अरावली पहाड़ से की और क्यों?

प्रश्न 3. सोना ने पन्ना से बनवीर के बारे में क्या कहा?

बच्चो! उत्तर लिखने के लिए दिया गया समय अब समाप्त हो चुका है। आशा करती हूँ कि आपने पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. बनवीर द्वारा आयोजित नृत्य-गीत का उत्सव पन्ना को इसलिए अच्छा नहीं लगता क्योंकि पन्ना को इस उत्सव के पीछे बनवीर के किसी षड़यन्त्र की आशंका थी। पन्ना का मानना था कि यह नाच-गान वीरों को शोभा नहीं देता।

उत्तर 2. पन्नाधाय की तुलना बनवीर ने अरावली पहाड़ से की, क्योंकि वह अपनी सभी भावनाओं को जड़ बनाकर अपनी कर्तव्यनिष्ठता की ओर अग्रसर थीं। वहीं दूसरा कारण यह था कि बनवीर, कुँवर उदय सिंह की हत्या करना चाहता था और पन्नाधाय उसकी राह में पहाड़ की तरह अडिग होकर उसकी मंशाओं को पूर्ण नहीं होने दे रही थी।

उत्तर 3. सोना ने महाराज बनवीर के बारे में बताया कि वे उसके लिए एक रेशम की झूल लाए थे। उसे सिर से ओढ़कर नाचने में ऐसा लगता था जैसे मकड़ी के जाले से आर-पार चन्द्रमा की किरणें चमक रही हों।

बच्चो! अब एकांकी को आगे बढ़ाते हुए पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं। बनवीर को लगता है कि यदि धाय माँ महल में अरावली पहाड़ बन कर बैठ गई हैं तो तुम सब (सोना व सब लड़कियाँ) बनास नदी की तरह बहकर खुशी-खुशी आगे बढ़ते जाओ। बनवीर द्वारा सोना के सामने बनास नदी का प्रयोग इसलिए किया है क्योंकि वह सोना के माध्यम से अपने षड़यन्त्र को

सफल बनाना चाहता है इसलिए वह (बनवीर) सोना से कहता है कि तुम सब लड़कियाँ मेरे बनवास मयूर पक्ष कुंड में दीपदान करो और खूब नाचो- गाओ। इस प्रकार दीपदान करो जैसे संसार रूपी सागर में आत्माएँ तैर रही हों जैसे आसमान का सारा बादल पानी के रूप में बदल गया हो और फैले हुए पानी में बिजलियाँ छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटकर जगमगा रही हों और सुन्दर दृश्य उत्पन्न कर रही हों। उसी प्रकार तुम सभी मयूर पक्ष कुंड के जल में जलते हुए दीपों को बहा दो जैसे बिजलियाँ बादल के पानी में तैर रही हों।

सोना के अनुसार बनवीर चाहता है कि ऐसा उत्सव मनाया जाए कि कुँवर उदय सिंह भी इसे देखे बिना न रह सके। बनवीर का मानना है कि पन्ना के रहते कुँवर उदयसिंह इस उत्सव में शामिल नहीं हो पाएँगे। अतः ऐसा नाचो गाओ कि न चाहकर भी पन्ना को भी इसमें शामिल होना पड़े और जब पन्ना कुँवर को लेकर उत्सव में आ जाएँगी तब बनवीर इस अँधेरी रात में कुँवर को मारने में सफल हो जाएगा। इस प्रकार की बातें बनाकर सोना के माध्यम से वह अपने षड़यन्त्र को सफल बनाना चाहता है।

पन्ना के यह पूछने पर कि आज तुम बहुत उमंग में हो, सोना कहती है कि वह इस त्योहार से अर्थात् बनवीर की कृपा से बहुत प्रसन्न है। दीपकों को देखकर हमारे मन की उमंगें भी लौ देने लगी हैं अर्थात् जलने लगी हैं। सारा जीवन दीपावली के त्योहार की तरह प्रकाशमान हो गया है।

पन्ना सोना से पूछती है कि यह नाच-गान, खुशियाँ मनाना, भोग-विलास में डूब जाना ही तुम्हारा

त्योहार है ? सोना उत्तर देते हुए पन्ना से कहती है कि सभी नगर - निवासी इसमें भाग ले रहे हैं और उत्सव को मना रहे हैं परन्तु बस एक तुम ही इस उत्सव को नहीं मना रही हो । सोना जानती है कि पन्ना कुँवर की रक्षा करने के लिए ही न खुद उत्सव में जा रही है और न ही कुँवर को भेज रही है । अतः सोना पन्ना को बनवीर की शक्ति का एहसास दिलाते हुए कहती है कि धाय पहाड़ बनने अर्थात् बनवीर के कार्य में रुकावट डालने से कुछ नहीं होगा ,उल्टा तुम बनवीर के लिए बोझ बन जाओगी। ऐसा बोझ जिसे वह जब चाहे तब अपने सिर से उतार फेंकेगा । सोना पन्ना से नदी की भाँति बहने का आग्रह करती है। नदी की तरह बनने से पत्थर भी तुम्हारा बोझ धारण कर सकेंगे । अर्थात् यदि तुम पहाड़ बनकर रहोगी तो सबके लिए बोझ बन जाओगी। सब तुम्हे नापसंद करेंगे लेकिन यदि तुम नदी बन जाती हो अर्थात् समय के अनुसार परिवर्तनशील हो जाती हो तो लोग तुम्हें खुशी - खुशी स्वीकार करेंगे । नदी की तरह बनकर बहने से तुम्हारे चारों ओर खुशियाँ ही खुशियाँ होंगी । जब ये खुशियाँ नदी की लहरों के रूप में उठेंगी तो उसमें खुशियों भरा गीत होगा जब तुम्हारी उमंगें गिरेंगी अर्थात् तुम्हारी खुशियाँ कम होंगी और तुम शांत होगी तो उस गीत को भी लोग पसंद करेंगे । जिस प्रकार लोग नदी के स्वर को भी पसंद करते हैं, ऐसे तुम्हें भी पसंद करेंगे । जिस प्रकार नदी की कलकल ध्वनि में संगीत है उसी तरह तुम्हारे जीवन में खुशियाँ सदा बनी रहेंगी। गीत और नाच (खुशियाँ) इस प्रकार तुम्हारे जीवन में बना रहेगा जैसे सुख और सुहाग एक-साथ रहते हैं । जिस प्रकार एक सुहागिन स्त्री सदा सुखी होती है, उसी प्रकार तुम्हारे जीवन में भी खुशियाँ

सदा बनी रहेंगी। तुम हर्षोल्लास से अपना जीवन बिताओगी जब तुम नदी बन जाओगी तो तुम में भी लोग दीपदान करेंगे। जिस प्रकार शुक्र तारे (जो उषा के आने का संदेश लेकर आता है) को अपने सिर पर रखकर सुबह आती है ऐसे ही ज्ञात होगा जैसे तुम जीवन की उम्मीद का समय लेकर चली आ रही हो।

बच्चो! आज हम इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। सभी छात्र इस एकांकी को पृष्ठ संख्या सत्तासी (87) तक दो-तीन बार पढ़ेंगे व समझने का प्रयास करेंगे। दिए गए गृहकार्य को सभी छात्र एकांकी की सहायता से स्वयं करने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

" उन्होंने कहा, महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई है। अरावली पहाड़ तो तुम लोग बनास नदी बनकर बहो न ------ मेरे बनवीर हुए मयूर पंख कुंड में दीपदान करो।"

(पाठ्य पुस्तक पृष्ठ संख्या 87)

प्रश्न 1. 'उन्होंने' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? उसका परिचय दीजिए।

प्रश्न 2. नाच-गायन तथा दीपदान का आयोजन किसने तथा किस उद्देश्य से करवाया?

प्रश्न 3. पन्ना की कर्तव्यनिष्ठा एवं स्वामिभक्ति पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 4. बनास नदी का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है और क्यों?

धन्यवाद! [अंतिम पृष्ठ]